चित्रःगूगल से साभार

कितना प्यारा है बचपन

कितना प्यारा है बचपन
खोजती अपना घर-आँगन,
सदाबहार अमरुद, नींबू के पेड़,
थोड़ी कच्ची-पक्की निबौरी ,
तोड़ना, खाना, इकट्ठे करना।

प्रातः हरसिंगार के फूलों को,
समेटना फ्राक के कोनों में ,
रंगरेज बन, दुपट्टे रंगना,
खिलखिलाना, तितलियाँ पकड़ना ।

गुच्छे बेला, चमेली, रातरानी के,
तोड़ना, सूँघना, माला गूँथना,
पुजारी बन अर्पित करना,
घंटा-घड़ियाल बजाना।

टूटे-फूटे ईंटों से बना मंदिर,
अपनी वानर सेना के संग,
तालियाँ बजा आरती गाना ,
गुड़हल के पत्तों पर प्रसाद बाँटना।

संग शायरा, करतार औ' शकील,
छुटकी मुनिया और सलील,
मिल गाते – ईश्वर-अल्लाह तेरो नाम,
सबको सन्मति दे भगवान।

कितना प्यारा है बचपन,
सब में रहता अपनापन,
न कोई यहाँ हिन्दू-मुस्लिम,
न कोई है सिक्ख-ईसाई।

बचपन नहीं जनता भिन्नता,
न है उसमें सांप्रदायिकता ,
बस इसमें है कौतुकता,
यह केवल फैलता एकता।

क्यों न सब बच्चे हो जाएँ?
लड़े-झगड़े, एक हो जाएँ,
साथ-साथ खेलें औ' मुस्काएँ,
माँ-भारती का स्नेह पाएँ।

डॉ अनीता पंडा
शिलांग